Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

कोशल, वत्स, अवन्ति और मगध के मध्य शक्ति–संघर्षः प्राचीन भारत की राजनीतिक गतिशीलता का अध्ययन

कुमारी नेहा चौहान
शोधार्थी, इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
ईसा–पूर्व छठी–पाँचवीं शताब्दी का उत्तर भारतीय राजनीतिक इतिहास अनेक महाजनपदों के बीच क्षेत्रीय प्रभुत्व स्थापित करने की प्रतिस्पर्धा से निर्मित हुआ। सोलह महाजनपदों में से कालांतर में कोशल, वत्स, अवन्ति और मगध ऐसी चार प्रमुख राजतंत्रीय शक्तियों के रूप में उभरे जिन्होंने उत्तर और मध्य भारत की राजनीति की दिशा को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य इन चार राज्यों का पृथक राजनीतिक इतिहास प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि उनके बीच विकसित शक्ति–संघर्ष, प्रतिस्पर्धा, कूटनीति, वैवाहिक गठबंधनों और बदलते शक्ति–संतुलन का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। कोशल का काशी पर प्रभुत्व उसे मध्यदेश की राजनीति में महत्वपूर्ण बनाता था, वत्स अपनी मध्यवर्ती स्थिति के कारण पूर्वी और पश्चिमी शक्तियों के बीच रणनीतिक भूमिका निभाता था, अवन्ति पश्चिम और मध्य भारत की प्रभावशाली शक्ति के रूप में वत्स तथा मगध दोनों के लिए चुनौती प्रस्तुत करता था, जबकि मगध धीरे–धीरे इन राजनीतिक समीकरणों में निर्णायक स्थान प्राप्त करता गया। इन राज्यों के संबंध केवल युद्ध पर आधारित नहीं थे, वैवाहिक संबंध, राजदूतों का आदान–प्रदान, अस्थायी मैत्री और समझौते भी शक्ति–संतुलन के साधन थे। उदयन और वासवदत्ता से संबंधित परंपरा तथा कोशल और मगध के बीच काशी से जुड़ा विवाद इस जटिल कूटनीति को अभिव्यक्त करते हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि इन चार महाजनपदों का इतिहास किसी एक राज्य की निरंतर विजय की सरल कथा नहीं था, बल्कि अस्थिर गठबंधनों, प्रतिस्पर्धी राजवंशों, सीमांत क्षेत्रों और बदलते राजनीतिक अवसरों से निर्मित बहु–केंद्रीय व्यवस्था थी, जिसके क्रमिक विघटन ने अंततः उत्तर भारत में अधिक व्यापक राजनीतिक केंद्रीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रमुख शब्दः महाजनपद, कोशल, वत्स, अवन्ति, मगध, शक्ति–संघर्ष, कूटनीति, शक्ति–संतुलन, उदयन, प्रसेनजित, प्रद्योत।

प्रस्तावना

महाजनपदकालीन उत्तर भारत की राजनीति को केवल सोलह स्वतंत्र राज्यों की स्थिर व्यवस्था के रूप में नहीं देखा जा सकता, क्योंकि ईसा–पूर्व छठी शताब्दी तक इन राजनीतिक इकाइयों के बीच शक्ति का वितरण तेजी से बदल रहा था। छोटे राज्यों का प्रभाव कम हो रहा था

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

तथा कुछ बड़े राजतंत्र अपने पड़ोसी क्षेत्रों पर प्रभुत्व स्थापित करके क्षेत्रीय शक्ति बनने लगे थे। हेमचन्द्र रायचौधुरी ने इस समय की राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए स्पष्ट रूप से कोशल, वत्स, अवन्ति और मगध को उस युग की चार प्रमुख राजतंत्रीय शक्तियाँ माना है।[1] उपिन्दर सिंह भी महाजनपदों के राजनीतिक विकास में इन चार राज्यों को प्रमुख शक्ति–संघर्ष के केंद्रीय पक्षों के रूप में पहचानती हैं।[2] इनके बीच संबंध किसी आधुनिक स्थायी गठबंधन–प्रणाली के समान नहीं थे, परिस्थितियों के अनुसार मित्र राज्य प्रतिद्वंद्वी बन सकता था और प्रतिद्वंद्वी के साथ विवाह अथवा समझौता राजनीतिक तनाव को अस्थायी रूप से समाप्त कर सकता था। इसी कारण इस काल की राजनीति को केवल युद्धों की क्रमबद्ध सूची के रूप में समझना पर्याप्त नहीं है। वास्तविक प्रश्न यह है कि राज्यों ने अपनी सुरक्षा, प्रतिष्ठा और राजनीतिक प्रभाव बनाए रखने के लिए किन साधनों का प्रयोग किया तथा एक शक्ति की वृद्धि ने अन्य राज्यों की नीति को किस प्रकार प्रभावित किया। काशी पर कोशल का अधिकार, अवन्ति का वत्स पर दबाव, वत्स की मध्यवर्ती स्थिति और मगध के साथ कोशल तथा अवन्ति के बदलते संबंध इसी व्यापक प्रक्रिया का हिस्सा थे। राजनीतिक गतिशीलता का अर्थ यहाँ केवल सीमा–विस्तार नहीं, बल्कि एक ऐसी बहु–राज्यीय व्यवस्था से है जिसमें प्रत्येक प्रमुख शक्ति अपनी स्थिति का आकलन दूसरे राज्यों की शक्ति, गठबंधन और संभावित हस्तक्षेप को ध्यान में रखकर करती थी।

चार प्रमुख शक्तियों का उदय और बहु–केंद्रीय राजनीतिक व्यवस्था

महाजनपदों के युग की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि उत्तर भारत तत्काल किसी एक राज्य के अधीन नहीं आया, बल्कि लंबे समय तक अनेक क्षेत्रीय शक्ति–केंद्रों के बीच संतुलन बना रहा। कोशल ने काशी को अपने प्रभाव में लाकर पूर्वी उत्तर प्रदेश और सरयू–गंगा क्षेत्र में अपना स्थान मजबूत किया, वत्स की राजधानी कौशाम्बी गंगा–यमुना क्षेत्र में स्थित होने से वह उत्तर, पूर्व और पश्चिम से आने वाली राजनीतिक शक्तियों के संपर्क में था, अवन्ति उज्जयिनी और माहिष्मती जैसे केंद्रों के माध्यम से मध्य भारत की प्रमुख शक्ति थी, जबकि मगध पूर्वी गंगा क्षेत्र का उभरता हुआ राजतंत्र था। बी. सी. लॉ ने इन चार राज्यों के संबंधों पर चर्चा करते हुए इस ओर संकेत किया है कि तत्कालीन बड़े राज्यों ने निकटवर्ती क्षेत्रों को अपने नियंत्रण में लेकर अपनी राजनीतिक सीमा बढ़ाई और वत्स की स्थिति ऐसी थी कि वह मगध तथा अवन्ति और कोशल तथा अवन्ति के बीच एक प्रकार के मध्यवर्ती अथवा

[1] रायचौधुरी, एच. सी. (1927). पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, कलकत्ता, पृ. 97–102.

[2] सिंह, उपिन्दर. (2008). ए हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट एंड अर्ली मीडिवल इंडिया. पियर्सन लॉन्गमैन, दिल्ली, पृ. 260–263.

इनर्मित राज्य का कार्य कर सकता था।[3] यह मध्यवर्ती स्थिति वत्स को केवल निष्क्रिय सीमा–प्रदेश नहीं बनाती थी, इसके विपरीत उसकी स्वतंत्रता व्यापक शक्ति–संतुलन का एक आवश्यक तत्व थी। यदि अवन्ति वत्स पर स्थायी नियंत्रण स्थापित करता, तो उसका प्रभाव पूर्व की ओर बढ़ सकता था, यदि पूर्वी शक्तियाँ वत्स को अपने पक्ष में रखतीं, तो अवन्ति की दिशा में राजनीतिक संतुलन बदल सकता था। इसी प्रकार कोशल और मगध के बीच काशी जैसे क्षेत्रों का महत्व केवल स्थानीय सीमा–विवाद तक सीमित नहीं था। चारों शक्तियों की राजनीति परस्पर संबद्ध थी और एक क्षेत्र में होने वाला परिवर्तन दूसरी दिशा में गठबंधन अथवा सैन्य तैयारी को प्रभावित कर सकता था। इसीलिए इसे बहु–केंद्रीय राजनीतिक व्यवस्था कहना अधिक उपयुक्त है।[4]

कोशल की प्रधानता और काशी का राजनीतिक प्रश्न

कोशल का उत्थान महाजनपदकालीन शक्ति–संघर्ष की पृष्ठभूमि समझने के लिए आवश्यक है, क्योंकि छठी शताब्दी ईसा–पूर्व तक उसने पहले से प्रतिष्ठित काशी को अपने प्रभुत्व में शामिल कर लिया था। काशी और कोशल के बीच संघर्ष की स्मृति जातक तथा अन्य बौद्ध स्रोतों में विभिन्न रूपों में सुरक्षित है। इन कथाओं को प्रत्येक युद्ध के प्रत्यक्ष ऐतिहासिक अभिलेख के रूप में स्वीकार करना उचित नहीं है, किंतु संयुक्त परंपरा से यह स्पष्ट होता है कि काशी लंबे समय तक राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का केंद्र रहा। रायचौधुरी के अनुसार सातवीं और छठी शताब्दी ईसा–पूर्व में कोशल पहले काशी और बाद में मगध के साथ मध्यदेश की प्रधानता के लिए संघर्ष करने वाली प्रमुख शक्ति बन चुका था।[5] प्रसेनजित के समय काशी कोशल की सत्ता के अंतर्गत था और बौद्ध स्रोत उसे 'काशी–कोशल' पर शासन करने वाला राजा प्रस्तुत करते हैं।[6] काशी का प्रश्न आगे चलकर कोशल और मगध के संबंधों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हुआ, क्योंकि राजनीतिक विवाह के अंतर्गत काशी से प्राप्त आय से संबंधित एक क्षेत्र मगध के शाही परिवार से जुड़ा था। इस कारण काशी एक ऐसा सीमांत प्रश्न बन गया जहाँ वैवाहिक कूटनीति और राजकीय संप्रभुता एक–दूसरे से टकराती दिखाई देती हैं। कोशल की शक्ति का आकलन केवल उसके भू–क्षेत्र से नहीं बल्कि इस तथ्य से भी किया जा सकता है कि प्रसेनजित विभिन्न अधीनस्थ अथवा संबद्ध राजाओं के बीच प्रमुख व्यक्ति के रूप में दिखाई देता है और शाक्य क्षेत्र पर भी उसकी सर्वोच्चता मान्य थी। इस प्रकार कोशल

[3] लॉ, बी. सी. (1943). ट्राइब्स इन एंशिएंट इंडिया. भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना, पृ. 237–245.
[4] बाशम, ए. एल. (1954). द वंडर दैट वाज इंडिया. सिडगविक एंड जैक्सन, लंदन, पृ. 45–50.
[5] रायचौधुरी, एच. सी. (1927). पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, कलकत्ता, पृ. 79–81.
[6] डेविड्स, टी. डब्ल्यू. रीस. (1903). बुद्धिस्ट इंडिया. टी. फिशर अनविन, लंदन, पृ. 6–8.

की राजनीति व्यापक अधिराज्य, सीमांत नियंत्रण और राजवंशीय संबंधों के संयोजन पर आधारित थी।

वत्स की मध्यवर्ती स्थिति और राजनीतिक महत्त्व

वत्स महाजनपद की राजनीतिक भूमिका को केवल राजा उदयन से जुड़ी रोचक प्रेमकथाओं तक सीमित कर देना इस राज्य की वास्तविक ऐतिहासिक स्थिति को कम करके देखना होगा। कौशाम्बी में केंद्रित वत्स ऐसी भौगोलिक–राजनीतिक स्थिति में था जहाँ पश्चिम से अवन्ति और पूर्व की ओर मगध की बढ़ती गतिविधियों के साथ–साथ उत्तर की दिशा में कोशल की उपस्थिति का प्रभाव महसूस किया जा सकता था। इसी कारण बी. सी. लॉ ने वत्स को अवन्ति और पूर्वी राज्यों के बीच महत्वपूर्ण मध्यवर्ती शक्ति के रूप में देखा है।[7] वत्स की स्वतंत्रता का संरक्षण स्वयं उसके शासकों के लिए आवश्यक था, क्योंकि अवन्ति की शक्ति–वृद्धि उसे प्रत्यक्ष दबाव में ला सकती थी। साहित्यिक स्रोतों में वत्स के शासक शतानीक और बाद में उदयन से संबंधित अनेक परंपराएँ मिलती हैं। इनमें राजनीतिक संघर्ष, बंदी बनाए जाने, विवाह, पुनर्स्थापना और विजय जैसी कथाएँ शामिल हैं, लेकिन इतिहासकार इन विवरणों के उपयोग में सावधानी बरतते हैं। रायचौधुरी ने विशेष रूप से कहा है कि उदयन के संबंध में बाद की कथाओं में ऐतिहासिक तथ्य और लोकप्रिय लोककथा को अलग करना कठिन है।[8] फिर भी विभिन्न स्वतंत्र साहित्यिक परंपराओं में उदयन का अवन्ति और मगध दोनों के राजपरिवारों से वैवाहिक संबंधों से जुड़ना इस बात का संकेत देता है कि वत्स की राजनीति व्यापक अंतरराज्यीय कूटनीतिक नेटवर्क का हिस्सा थी। यदि इन परंपराओं का मूल ऐतिहासिक तत्व स्वीकार किया जाए, तो विवाह वत्स के लिए शक्तिशाली पड़ोसी अवन्ति के साथ संघर्ष को नियंत्रित करने और पूर्वी राजवंशों के साथ संबंध विकसित करने का एक साधन था। इस प्रकार वत्स शक्ति–संतुलन का सक्रिय सहभागी था।

अवन्ति की शक्ति और प्रद्योत की आक्रामक कूटनीति

अवन्ति पश्चिमी और मध्य भारत की सबसे प्रभावशाली महाजनपदीय शक्तियों में से एक था और प्रद्योत के समय उसकी राजनीतिक प्रतिष्ठा इतनी अधिक थी कि उसके पड़ोसी राज्यों को उसकी संभावित सैन्य कार्रवाई को गंभीरता से लेना पड़ता था। प्रारम्भिक बौद्ध परंपरा प्रद्योत को कठोर और प्रभावशाली शासक के रूप में प्रस्तुत करती है, जबकि पुराणीय परंपराएँ भी पड़ोसी शासकों पर उसके प्रभाव का संकेत देती हैं। रायचौधुरी के अध्ययन में प्रद्योत का महत्व इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि मगध में भी उसके संभावित आक्रमण की आशंका थी

[7] लॉ, बी. सी. (1943). ट्राइब्स इन एंशिएंट इंडिया. भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना, पृ. 227–232.
[8] रायचौधुरी, एच. सी. (1927). पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, कलकत्ता, पृ. 107–108.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4
ISSN No: 3049 4176

और अजातशत्रु द्वारा राजगृह की रक्षा को मजबूत करने का एक कारण अवन्ति की ओर से संभावित खतरा बताया गया है।[9] इससे स्पष्ट है कि अवन्ति केवल वत्स का क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वी नहीं था, उसकी शक्ति पूर्वी भारत के राजनीतिक आकलन को भी प्रभावित करती थी। प्रद्योत और वत्स के संबंधों में सैन्य संघर्ष और वैवाहिक कूटनीति का रोचक संयोजन दिखाई देता है। उदयन और प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता के विवाह की परंपरा धम्मपद–अट्ठकथा, नाटकीय साहित्य और बाद की कथाओं में मिलती है।[10] इन कथाओं का अलंकरण स्पष्ट है, इसलिए उनके प्रत्येक विवरण को प्रत्यक्ष इतिहास नहीं माना जा सकता, किंतु राजनीतिक स्तर पर यह संभव प्रतीत होता है कि पूर्व शत्रु राज्यों के बीच विवाह–संबंध ने तनाव को नियंत्रित करने का कार्य किया हो। प्रद्योत की राजनीति का यह पक्ष महत्वपूर्ण है कि शक्ति का प्रदर्शन और राजवंशीय संपर्क एक–दूसरे के विकल्प नहीं, बल्कि पूरक साधन थे। अवन्ति अपने प्रभाव की रक्षा के लिए युद्ध की क्षमता प्रदर्शित करता था, लेकिन आवश्यक होने पर वैवाहिक संबंधों के माध्यम से राजनीतिक समीकरण बदलना भी संभव था।

कोशल और मगध के मध्य प्रतिस्पर्धाः संघर्ष से समझौते तक

कोशल और मगध के संबंध महाजनपदकालीन राजनीति में इस बात का अत्यंत अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि मैत्री, वैवाहिक गठबंधन और युद्ध एक ही दो राज्यों के संबंधों में अलग–अलग समय पर उपस्थित हो सकते थे। प्रारम्भिक चरण में दोनों राजवंशों के बीच विवाह ने मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए। कोशल के राजघराने की एक राजकुमारी का विवाह मगध के शासक परिवार में हुआ और उसके साथ काशी से संबंधित आय का एक ग्राम वैवाहिक अनुदान के रूप में दिया गया। रायचौधुरी के अनुसार यह ग्राम पर्याप्त राजस्व प्रदान करता था और बाद की राजनीतिक परिस्थितियों में इसी आय के अधिकार ने विवाद को जन्म दिया।[11] परिस्थितियाँ बदलने पर प्रसेनजित और अजातशत्रु के बीच युद्ध हुए और बौद्ध स्रोत दोनों पक्षों की क्रमिक सफलता–असफलता का उल्लेख करते हैं। इस संघर्ष का महत्त्व केवल यह नहीं था कि दो शासकों ने एक–दूसरे को युद्धभूमि में चुनौती दी, बल्कि यह था कि काशी पर अधिकार और दोनों राज्यों की प्रतिष्ठा व्यापक शक्ति–संतुलन से जुड़ गई थी। युद्ध का अंत पूर्ण विनाश के बजाय पुनः वैवाहिक समझौते से हुआ, प्रसेनजित की पुत्री वजिरा का विवाह अजातशत्रु से जुड़ा बताया जाता है और काशी से संबंधित विवाद भी समझौते का

---

[9] रायचौधुरी, एच. सी. (1927). पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, कलकत्ता, पृ. 108–109.

[10] सेन, शैलेन्द्र नाथ. (1999). एंशिएंट इंडियन हिस्ट्री एंड सिविलाइजेशन. न्यू एज इंटरनेशनल, नई दिल्ली, पृ. 109–115.

[11] रायचौधुरी, एच. सी. (1927). पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, कलकत्ता, पृ. 100–105.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4
ISSN No: 3049 4176

हिस्सा बना।[12] यह घटना महाजनपदकालीन कूटनीति का मूल चरित्र उजागर करती है। राज्य अपने प्रतिद्वंद्वी को स्थायी शत्रु मानकर नहीं चलते थे, यदि विवाह से सीमा–संघर्ष समाप्त किया जा सकता था और राजनीतिक प्रतिष्ठा संरक्षित रहती थी, तो समझौता युद्ध से अधिक उपयोगी हो सकता था। इसलिए कोशल–मगध संबंध 'मित्र या शत्रु' जैसी सरल श्रेणियों में नहीं रखे जा सकते।

वत्स और अवन्तिः युद्ध, बंदीकरण और वैवाहिक संधि की परंपरा

वत्स और अवन्ति के संबंध प्राचीन भारतीय राजनीतिक इतिहास में सैन्य प्रतिस्पर्धा और राजवंशीय कूटनीति के परस्पर परिवर्तन का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण हैं। प्रद्योत और उदयन से संबंधित साहित्यिक कथाएँ विभिन्न रूपों में उपलब्ध हैं, जिनमें उदयन को अवन्ति द्वारा बंदी बनाए जाने, प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता से उसका प्रेम और अंततः विवाह का उल्लेख मिलता है। बाद के संस्कृत नाटक, विशेष रूप से भास की स्वप्नवासवदत्ता, इस परंपरा को अत्यधिक नाटकीय स्वरूप देते हैं। इसलिए इन कथाओं को समकालीन राजनीतिक घटनाओं का शब्दशः अभिलेख नहीं माना जा सकता। रायचौधुरी भी स्पष्ट करते हैं कि उदयन से संबंधित लोकप्रिय कथाओं से ऐतिहासिक मूल तत्व को अलग करना कठिन है, किंतु वे इस संभावना को स्वीकार करते हैं कि उदयन ने अवन्ति के राजघराने से वास्तविक वैवाहिक संबंध स्थापित किया था।[13] राजनीतिक दृष्टि से यह संबंध अत्यंत तर्कसंगत प्रतीत होता है। यदि वत्स और अवन्ति पहले प्रतिद्वंद्वी थे, तो विवाह ने दोनों राजवंशों को एक ऐसे समझौते की दिशा दी जिसमें अवन्ति को अपने पूर्वी सीमांत पर स्थिरता मिल सकती थी और वत्स अपनी स्वतंत्र राजकीय स्थिति बचाए रख सकता था। बी. सी. लॉ के अध्ययन में भी वत्स और अवन्ति के बीच संघर्ष और बाद के संबंधों का उल्लेख इस व्यापक क्षेत्रीय राजनीति के संदर्भ में मिलता है।[14] इसलिए उदयन–वासवदत्ता कथा का महत्व केवल साहित्यिक रोमांस में नहीं है, वह इस संभावना को प्रतिबिंबित करती है कि प्राचीन राजवंश युद्ध और वैवाहिक संबंधों दोनों का प्रयोग शक्ति–संतुलन के साधन के रूप में करते थे। इस संबंध ने वत्स को पूर्णतः अवन्ति में विलीन होने से भी कुछ समय तक बचाए रखा होगा।

वैवाहिक कूटनीति और राजवंशीय संबंधों की भूमिका

चारों महाजनपदों की राजनीति में वैवाहिक संबंध निजी पारिवारिक घटनाएँ नहीं थे, बल्कि अंतरराज्यीय कूटनीति के महत्वपूर्ण साधन थे। किसी शक्तिशाली पड़ोसी राजघराने से विवाह

---

[12] शर्मा, आर. एस. (2007). इंडियाज एंशिएंट पास्ट. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 147–150.
[13] रायचौधुरी, एच. सी. (1927). पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, कलकत्ता, पृ. 107–108.
[14] लॉ, बी. सी. (1943). ट्राइब्स इन एंशिएंट इंडिया. भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना, पृ. 239–244.

करने का अर्थ था अस्थायी सुरक्षा, राजवंशीय प्रतिष्ठा, विवादित क्षेत्र पर समझौता अथवा किसी तीसरी शक्ति के विरुद्ध अप्रत्यक्ष संतुलन। कोशल और मगध के बीच विवाह ने आरम्भ में मैत्री को मजबूत किया तथा काशी से प्राप्त राजस्व को दोनों राजवंशों के संबंध से जोड़ दिया। बाद में राजनीतिक तनाव उत्पन्न होने पर यही व्यवस्था विवाद का विषय बनी और पुनः एक नए विवाह ने संघर्ष के समाधान में भूमिका निभाई।[15] इसी प्रकार वत्स के उदयन का अवन्ति की राजकुमारी वासवदत्ता से विवाह पूर्व शत्रु शक्तियों के बीच सामंजस्य की संभावना व्यक्त करता है। साहित्यिक परंपरा उदयन को एक अन्य राजवंशीय विवाह से भी जोड़ती है, जिससे यह संकेत मिलता है कि वत्स ने बड़ी शक्तियों के बीच अपनी स्थिति सुरक्षित रखने के लिए विवाह–संबंधों का उपयोग किया होगा।[16] इस प्रकार विवाह किसी स्थायी 'मित्रता संधि' की गारंटी नहीं था, लेकिन वह तत्काल राजनीतिक वातावरण बदल सकता था। राजवंशीय विवाह की एक विशेषता यह थी कि उसके साथ भूमि, ग्राम, राजस्व अथवा उत्तराधिकार संबंधी प्रश्न भी जुड़ सकते थे, जिससे पारिवारिक संबंध सीधे अंतरराज्यीय राजनीति का विषय बन जाते थे। वैवाहिक नीति का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष वैधता था, किसी प्रतिष्ठित राजपरिवार से संबंध स्थापित करना राजा की स्थिति को व्यापक राजनीतिक संसार में मजबूत कर सकता था। इसलिए महाजनपदकालीन शक्ति–संतुलन केवल सेनाओं और सीमाओं से निर्धारित नहीं था, राजपरिवार स्वयं कूटनीतिक नेटवर्क के सक्रिय उपकरण थे और विवाह युद्धोत्तर समाधान, सुरक्षा तथा प्रतिष्ठा का साधन बन सकता था।

वत्स एक 'बफर' शक्ति के रूप में और त्रिकोणीय शक्ति–संतुलन

चार राज्यों की राजनीतिक गतिशीलता को समझने में वत्स की मध्यवर्ती भूमिका विशेष महत्त्व रखती है। कौशाम्बी में केंद्रित वत्स को यदि केवल एक स्वतंत्र महाजनपद मानकर देखा जाए तो उसके व्यापक राजनीतिक महत्व का एक हिस्सा छूट जाता है। बी. सी. लॉ ने स्पष्ट रूप से वत्स को मगध और अवन्ति तथा कोशल और अवन्ति के मध्य एक संभावित मध्यवर्ती राज्य के रूप में वर्णित किया है।[17] इसका तात्पर्य आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति के औपचारिक 'बफर स्टेट' से पूर्णतः समान नहीं है, पर अवधारणा उपयोगी हैः वत्स का स्वतंत्र बने रहना पश्चिमी अवन्ति और पूर्वी शक्तियों के बीच प्रत्यक्ष सीमा–संघर्ष को कुछ हद तक रोकता था। यदि अवन्ति वत्स पर पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करता, तो उसकी राजनीतिक पहुँच गंगा–यमुना क्षेत्र में गहराई तक आ सकती थी। दूसरी ओर यदि वत्स पूर्वी राज्यों के साथ

[15] सिंह, उपिन्दर. (2008). ए हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट एंड अर्ली मीडिवल इंडिया. पियर्सन लॉन्गमैन, दिल्ली, पृ. 269–271.
[16] बाशम, ए. एल. (1954). द वंडर दैट वाज इंडिया. सिडगविक एंड जैक्सन, लंदन, पृ. 46–51.
[17] लॉ, बी. सी. (1943). ट्राइब्स इन एंशिएंट इंडिया. भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना, पृ. 243–245.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

घनिष्ठ संबंध बनाता, तो वह अवन्ति के पूर्वगामी विस्तार के सामने अवरोध बन सकता था। इसी कारण उदयन के विभिन्न राजघरानों से संबंधित विवाहों की राजनीतिक उपयोगिता भी समझ आती है। यह एक ऐसे राज्य की रणनीति हो सकती थी जिसकी स्वतंत्रता स्वयं बड़ी शक्तियों के परस्पर संतुलन पर निर्भर थी। कौशाम्बी से संबंधित पुरातात्त्विक और साहित्यिक अध्ययन भी संकेत करते हैं कि वत्स लंबे समय तक अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखने में सफल रहा और उसके अंत को सरल तथा तत्काल प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।[18] इस प्रकार चार महाजनपदों के संघर्ष में सभी राज्य समान भूमिका नहीं निभाते थे। कोशल, अवन्ति और मगध बड़े प्रतिस्पर्धी शक्ति–केंद्र थे, जबकि वत्स कई अवसरों पर उनके बीच शक्ति के प्रवाह को रोकने, मोड़ने अथवा संतुलित करने वाला मध्यवर्ती तत्व था।

अवन्ति और मगधः दूरस्थ प्रतिद्वंद्विता से प्रत्यक्ष चुनौती तक

अवन्ति और मगध के बीच संबंध यह दर्शाते हैं कि महाजनपदकालीन शक्ति–संघर्ष केवल उन राज्यों के बीच नहीं होता था जिनकी तत्काल साझा सीमा हो। प्रद्योत के समय अवन्ति की सैन्य प्रतिष्ठा इतनी अधिक थी कि पूर्वी भारत में स्थित मगध को भी उसके संभावित हस्तक्षेप की संभावना पर विचार करना पड़ता था। मज्झिम निकाय से संबंधित परंपरा के आधार पर रायचौधुरी उल्लेख करते हैं कि अजातशत्रु ने राजगृह की किलेबंदी को इस आशंका से मजबूत किया कि प्रद्योत आक्रमण कर सकता है।[19] इस सूचना का महत्व वास्तविक आक्रमण के घटित होने से अधिक राजनीतिक धारणा में हैः अवन्ति की शक्ति ऐसी थी कि मगध की सुरक्षा–नीति उसके संभावित व्यवहार को ध्यान में रखती थी। दूसरी ओर दोनों राज्यों के संबंध हमेशा शत्रुतापूर्ण नहीं थे। पूर्ववर्ती चरण में मगध से वैद्य जीवक को प्रद्योत के उपचार हेतु भेजे जाने की बौद्ध परंपरा दोनों राजदरबारों के बीच संपर्क का संकेत देती है।[20] अतः मैत्रीपूर्ण व्यक्तिगत अथवा चिकित्सकीय संपर्क और रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता एक साथ संभव थे। यही महाजनपदकालीन कूटनीति की जटिलता थी। राज्य दूसरे राजदरबार के साथ संवाद बनाए रख सकता था, पर साथ ही संभावित संघर्ष के लिए तैयारी भी कर सकता था। वत्स की मध्यवर्ती स्थिति ने कुछ समय तक अवन्ति और मगध के बीच प्रत्यक्ष राजनीतिक दबाव को कम किया होगा, लेकिन जैसे–जैसे मध्यवर्ती शक्तियों की स्थिति बदलती गई, दोनों बड़े राजतंत्रों के हित अधिक प्रत्यक्ष रूप से टकराने लगे। इस प्रकार अवन्ति–मगध प्रतिद्वंद्विता

[18] घोष, ए. (1937). कौशाम्बी इन एंशिएंट लिटरेचर. मेमॉइर्स ऑफ द आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, संख्या 60, दिल्ली, पृ. 8–12.

[19] रायचौधुरी, एच. सी. (1927). पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, कलकत्ता, पृ. 108–109.

[20] डेविड्स, टी. डब्ल्यू. रीस. (1903). बुद्धिस्ट इंडिया. टी. फिशर अनविन, लंदन, पृ. 7–12.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

तत्काल युद्धों की लंबी श्रृंखला से अधिक उस बदलते शक्ति–संतुलन की अभिव्यक्ति थी जिसमें दोनों राज्य व्यापक क्षेत्रीय प्रभुत्व के संभावित दावेदार थे।

शक्ति–संतुलन का परिवर्तन और चार–राज्यीय व्यवस्था का विघटन

कोशल, वत्स, अवन्ति और मगध की चार–राज्यीय व्यवस्था स्थायी नहीं थी। इसकी मूल कमजोरी यह थी कि प्रत्येक राज्य की स्थिति उसके आंतरिक उत्तराधिकार, पड़ोसी राज्यों के गठबंधनों और युद्धों के परिणामों से तेजी से बदल सकती थी। प्रसेनजित के अंतिम काल में कोशल की राजवंशीय अस्थिरता ने उसकी पूर्व स्थिति को कमजोर किया, वत्स के उदयन के बाद उपलब्ध राजनीतिक विवरण अधिक अस्पष्ट हो जाते हैं और उसके उत्तराधिकारियों की शक्ति उतनी स्पष्ट नहीं दिखाई देती, अवन्ति में प्रद्योत की मृत्यु के बाद भी उसका राजवंश कुछ समय तक बना रहा, किंतु वह उसी स्तर की चुनौती लगातार बनाए रखने में सफल नहीं हुआ। मगध ने इस बदलते वातावरण से लाभ प्राप्त किया, लेकिन इस प्रक्रिया को केवल उसकी पूर्वनिर्धारित 'अवश्यंभावी विजय' के रूप में पढ़ना उचित नहीं होगा। राजनीतिक परिणाम कई दशकों तक अनिश्चित रहे। रायचौधुरी के विवरण से स्वयं स्पष्ट है कि प्रद्योत को मगध के लिए वास्तविक खतरे के रूप में देखा जाता था और प्रसेनजित के अधीन कोशल भी शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी था।[21] कौशाम्बी पर किए गए प्राचीन साहित्य के अध्ययन में भी यह सावधानी व्यक्त की गई है कि वत्स और अवन्ति की स्वतंत्रता कब समाप्त हुई, इसे अत्यधिक निश्चित कालक्रम में बाँधना कठिन है।[22] इसलिए चार–राज्यीय व्यवस्था का विघटन एक ही निर्णायक युद्ध का परिणाम नहीं था। यह धीरे–धीरे बदलती राजवंशीय शक्ति, समझौतों, उत्तराधिकार संकट और क्षेत्रीय दबावों का संयुक्त परिणाम था। राजनीतिक गतिशीलता का यही तत्व महत्त्वपूर्ण है: छठी–पाँचवीं शताब्दी ईसा–पूर्व में कोई भी समकालीन पर्यवेक्षक प्रारम्भ से यह निश्चित नहीं मान सकता था कि अंततः एक ही पूर्वी शक्ति सर्वोच्चता प्राप्त करेगी।

निष्कर्ष

कोशल, वत्स, अवन्ति और मगध के मध्य शक्ति–संघर्ष प्राचीन भारत में क्षेत्रीय राज्यों की परस्पर प्रतिस्पर्धा और राजनीतिक केंद्रीकरण के बीच स्थित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक चरण का प्रतिनिधित्व करता है। इन चारों राज्यों के संबंधों से स्पष्ट होता है कि महाजनपदकालीन राजनीति न तो निरंतर युद्ध की स्थिति थी और न स्थायी गठबंधनों की सुव्यवस्थित प्रणाली। इसके विपरीत यह ऐसी गतिशील संरचना थी जिसमें युद्ध और समझौता, प्रतिद्वंद्विता और

[21] रायचौधुरी, एच. सी. (1927). पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, कलकत्ता, पृ. 108–109.

[22] घोष, ए. (1937). कौशाम्बी इन एंशिएंट लिटरेचर. मेमॉइर्स ऑफ द आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, संख्या 60, दिल्ली, पृ. 10–12.

वैवाहिक संबंध, शक्ति–प्रदर्शन और कूटनीतिक संपर्क एक साथ कार्य करते थे। कोशल ने काशी के साथ अपने संबंध और व्यापक अधिराज्य के माध्यम से प्रारम्भिक प्रधानता स्थापित की, वत्स ने बड़ी शक्तियों के मध्य अपनी रणनीतिक स्थिति का उपयोग किया, अवन्ति ने प्रद्योत के समय ऐसी क्षेत्रीय शक्ति प्रदर्शित की जिसने पूर्वी राज्यों की नीति को भी प्रभावित किया और मगध ने स्वयं को इसी प्रतिस्पर्धी राजनीतिक वातावरण के भीतर स्थापित किया। वत्स की भूमिका तथा कोशल–मगध और वत्स–अवन्ति के वैवाहिक समझौते यह दर्शाते हैं कि राजनीतिक संबंधों का निर्धारण केवल युद्धभूमि पर नहीं होता था। चार–राज्यीय शक्ति–संतुलन का क्रमिक विघटन भी किसी एक विजय का परिणाम नहीं था, बल्कि राजवंशीय परिवर्तन, उत्तराधिकार, अस्थिर गठबंधन और राजनीतिक अवसरों का संयुक्त परिणाम था। अतः इस काल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता राजनीतिक गतिशीलता थी – शक्ति का केंद्र लगातार परिवर्तित होता रहा और प्रत्येक राज्य को दूसरे राज्यों की नीति के अनुसार अपनी रणनीति बदलनी पड़ी।